मध्यकालीन हिन्दी
एम.ए. III सेमेस्टर। हिन्दी
6 Th Paper

डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा.

04.07.20

प्रश्न: घनानंद के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
या
घनानंद के काव्य-कला पर विचार कीजिए।

उत्तर: घनानंद के विषय में कहा जाता है कि वे शृंगारिक कवि थे। यदि गहराई में उतर कर देखा जाए तो स्पष्टतः कहना पड़ता है कि घनानंद के कविता का केन्द्रीय-भाव प्रेम है। प्रेम को हटाकर घनानंद की कविता का आस्वाद नहीं लिया जा सकता है। स्वयं घनानंद के शब्दों में "समुझै कविता घन आनंद की हिय आँखन नेह की पीर तकी।" रीतिकालीन कवियों में भले ही अलंकारिक चमत्कार की भावना का प्रधान हो, उन्होंने प्रेम या नारी को इस चमत्कार की बाँदी ही बनाकर रखा था। घनानंद एवं अन्य रीतिकाल के कवियों के बीच जो अंतर है वह प्रेम-भावना का ही है। घनानंद के प्रेम की पहली विशेषता है उसका स्वच्छंद होना। जहाँ इस काल के कवि रीति पद्धति पर रचना कर राज-रजवाड़ों का मनोरंजन कर रहे थे, वहीं घनानंद भाव-स्वच्छंदता एवं रीति मुक्त लेकर रस की वर्षा कर रहे थे।

वस्तुतः घनानंद का कलापक्ष रीतिकाल के अन्य कवियों के तरह नायिका-भेद पर टिका नहीं था। उनका भावपक्ष आयास मुक्त था एवं रूपपक्ष उतार लाने वाले अभूतपूर्व कवि का है। बिहारी जहाँ चित्रवादी हैं, घनानंद वहीं प्रभाववादी हैं। बिहारी कृष्ण के नख-शिख का वर्णन जहाँ बड़े मनोयोग से करते हैं, वहीं घनानंद का ध्यान अंतर की मधुर रूपी आँखों पर है। इस प्रकार घनानंद रीतिकाल में होते हुए भी अपनी आत्मनिष्ठ चेतना के कारण भक्तिकाल के सन्निकट प्रतीत होते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि घनानंद के काव्य में प्रकृति के बाह्य रूप के चित्र नहीं। उन्होंने अपने

P.T.O

काव्य में प्रकृति के मौलिक उद्भावनाओं को प्रस्तुत किया है। यमुना नदी का चित्र उतारते हुए उन्होंने एक जगह कहा है —

जुग कूल सरस सलाका चौकि परत ही,
अंजन सिंगार रूप अवरेख देई है।

पर, घनानंद का महत्व उनके प्रेम की आंतरिक अभिव्यंजना में अधिक दिखलाई पड़ता है। भाव-वेग, प्रेम की तन्मयता एवं स्वच्छंदता की दृष्टि से देखा जाए तो इनकी तुलना रसखान की कविताओं से की जा सकती है। दोनों ही लौकिक प्रेम से होकर अलौकिक प्रेम के क्षेत्र में आए थे। जहाँ रसखान के जीवन में विरह की कोई घड़ी न थी, लेकिन घनानंद को प्रेम के क्षेत्र में विश्वासघात का सामना करना पड़ा था। प्रतिक्रिया स्वरूप उनके काव्य में भक्ति की भावना जाग उठी। यही कारण है कि जहाँ रसखान के प्रेम में संयोग की प्रधानता है, वहीं घनानंद काव्य में वियोग की। रसखान की दृष्टि में प्रेम एक कठिन कर्म है —
"कमल तन्तु सौं छीन, अरु कठिन खड्ग की धार।"
लेकिन घनानंद के यहाँ प्रेम का मार्ग सीधा है। उसमें जरा भी बाँकपन नहीं। प्रेम के इस सरलपन से तात्पर्य संभवतः घनानंद के लिए उस साधना से है जिसमें तप कर तपस्वी और तेजवान बनता है। घनानंद जिस प्रेम-यातना का चित्रण अपने काव्य में किया वह मीरा के प्रेम की तन्मयता से कम नहीं है —

भय कागद नाव उपाय सबै, घन आनंद नेह नदी गहरे।

घनानंद के प्रेम यातना की समस्या यह है कि प्रियतम अमोही है लेकिन उसके बिना एक घड़ी एक कल्प के समान लगता है। एक तरफ प्रियतम अनजान होकर बैठा है, दूसरी ओर यह भी आशा है कि प्रियतम का वह मादक अंग शायद आ ही जाए। यह एक विचित्र अवस्था है और इस पार्दे स्थिति का एकमात्र भोक्ता घनानंद है। अपने लौकिक जीवन के सुजान को ही वे आध्यात्मिक जीवन का आधार बना लेते हैं। उनकी आत्मा खुद ही उसमें जलती रहती है।

P.T.O.

घनानंद की रचनाओं में प्रायः विरह की सभी अवस्थाओं के चित्र मिलते हैं। उनकी विरह-वेदना उच्छल नहीं बल्कि मर्मस्पर्शी है। 'चाह' की एक अनोखी आग में उनमें समा गयी है। उनका जीवन शुद्ध-सात्विक और वियोग का जीता-जागता उदाहरण है। इस आग के कारण उनका रोम-रोम व्याकुल है। उनके प्राण अपने प्रिय के दर्शन के लिए लालायित हैं, पर मिलन नहीं। उनका प्रेमी मन बस एक मिलन के आस के लिए ही जी रहा है।

जीव ते भई उदास तऊ है मिलन की आस।
जीवहि जिआऊँ नाम तेरे जपि-जपि॥

पर सुजान का संदेश नहीं आता। लेकिन प्रेमी अपने अटल विश्वास पर खड़ा है।

घनानंद विरह की विभिन्न दशाओं को अत्यधिक मार्मिक बनाकर उन्हें व्यापक कर दिया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने घनानंद के विषय में लिखा है — "घनानंद में जो कुछ हलचल है, वह भीतर की है। बाहर से वह वियोग प्रशांत एवं गंभीर है, न उसमें करवट बदलना है, न सेज की आग की तरह तपना है, न उछल-कूद कर भागना है।" दिनकर ने ठीक ही कहा था कि रीतिकाल की लौकिक विरहानुभूति की निष्प्राणता एवं कुंठा के वातावरण में घनानंद की पीड़ा की टीस सहसा ही हृदय को चीर देती है और मन यह सहज मान लेता है कि दूसरों के लिए किराये पर आँसू बहाने वालों के बीच यह एक ऐसा कवि है, जो सचमुच अपनी ही पीड़ा से रो रहा है। वस्तुतः घनानंद की रचनाएँ आत्मा की पुकार हैं। सचमुच प्रेम-मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक हिन्दी साहित्य में दूसरा नहीं दिखाई देता जिसने ब्रजभाषा काव्य को अपने अमृतमय शब्दों से अमर कर दिया हो।